

श्रीगणेशायनमः॥ अथ संकट
मोचनलिल्यते॥ सर्वेया॥ वा ।
लसमैरविलीलिल्यो॥ तव
तानद्गलोकभयोअधियारो
यत्तमथ्योहविदेतभयोयद्द

संकटकाहूपैजातनटारो॥
देवनजायकरीबिनतीतव
देवनकोतुमसंशोनिवारो॥
कोनाहिजानतहैजगमै॥ यह
शंकटमाचननामतिहारो॥ १॥

बालिके त्रास कर्षी सव सैति हि
जात महा प्रभु पंथ निहारो ॥ चो
के महा डर जानि कियो तव ॥
चारिहु कौन उपाय विचारो ॥
करि द्विज रूप लै आये महा ॥ प्र

भुसोतुमतासुकोसंकटद्वारे॥

कोनाहिजानतहेजगामें॥ यह

संकटमाचननामतिद्वारे॥

२॥ बाणलगेयोउरलक्ष्मणकैत

व॥ प्राणतजेसुतरावणमारो॥

लैरुहवैदसुयेतसमेत॥ जुना
वसिखलौंगिरिआननिवारो॥
लायसजीवनतुमहनुमानस
लक्ष्मणकेतुमथाणउवारो॥ को
नहिजानतहेजगमेंयह॥ संक

टमोचननामतिहारो॥३॥ अं
गदकेसंगकासश्चनेक॥ गये
सियकोश्रति सोचनिवारो॥ जी
वतनामचहौहमसौं जु॥ विना
सुधिलैइतकौं पशुधारो॥ हारथ

केतटसिंधुसवै॥लैआयेसिया
सुधिप्राणपियारो॥कोनहि
जानतहेजगमें॥यहसंकट
सोचननासतिहारो॥ध॥राव
एआसदयोसियकू॥जवरक्ष

कहाकर शोक निवारो॥ ता
ही समै हनुमान महाप्रभु जा
य महा राज नाच रमा रो॥ माग
त सीय अश्लेष कसौ आशि सोई
प्रभु मुद्रिका दै दुयटारो॥ कोन

हिजानत है जगमौ ॥ यह संक
ट मोचन नामति हारो ॥ ५ ॥ रा
वण जुहु अपावन कान ॥ सुना
ग कौ फोस सवै सिर डारो ॥ श्रीर
घु वीर स मेत सवै ॥ दल माहि भ

योऽतिमं शयमारो॥ आनिय
रोऽहिंको हनुमानं नृवंधन।
काटिकैकं कष्टनिवारो॥ को न हि
जानत है जगमै॥ यह संकटमै
चलना मतिहारो॥ ६॥ बंधुसमे

तिजवैमहि रावणा॥लेखुनाथ
पतालसिधारो॥देविहिंपूजिभ
लीविधिसे॥बलिदेनदोउजन
संत्रविचारो॥जायसहायभये
तवही॥अहिरावणासेनसमेत

संहारो॥ को नहि जानत है जग में
मैं यह॥ संकट मोचन नामति
हारो॥ ७॥ काज कियो बड लाग
न को तुम॥ वीर महा प्रभु देखि
विचारो॥ केतिक संकट मोहि।

गरीबको सो तुम सो नहि जात है
दारी॥ वेगदहरोहनुमानमहाप्र
भुजो कछु संकट होय हमारे॥
को नहि जानत है जग में यह सं
कट मोचन नामति हारे॥ ८॥ वा

लिकोत्रासकुसंगसुसंगातिव्या
कुलदेहदसाविसराड्॥ वैठिवे
चारिकरैगिरिऊपरआवतना
कछुचिन्तउपाड्॥ मनमैअनुमा
नकिथोरयुनायकभेटभड्स।

हरीदुचिताई॥ इहीविधिमोरा
कलेसहरोहनमानतुम्हेसिया
रामदुहाई॥ टे॥ आनसयेनहि
भौनसमेतगहेगिरिद्रोणदले
बलजाई॥ व्योमसपंथचलेअ

निश्चातरपुष्पकजानद्वतेतहं
आर्दे॥ श्रौषधलायप्रबोधित
कैतववैद्यजुर्कानउपायसद्वा
र्दे॥ इहीविधिमारकलेसद्दरोह
नुमानतुम्हेसियरामदुहार्दे॥ १॥

रामहिलैमहिगवणगोजववं
धुदोउबलिदेवियजाई॥चान
रभालुविहालयरेकहिजातन
हीकछुव्याकुलताई॥ताही
कोअंतकियोछिनसैभगवंत

हिश्रानिकर्पासमिलाई॥ड
ह्रीविधिमेरकलेसहरोहनु
मानतुम्हेसियरामदुहाई॥१॥
लौघिपयोधिप्रबोधसियाश्र
रुमेढाविभीषणकादुविताई॥

फेरियौ न सत आय कही जु सम ॥
स्तवि देह सता कुसला डे ॥ रावण
को मद मद न करि पुनिकी ने भर
त सखा स मुदा डे ॥ इही विधि ॥
मोर कले सहरो हनुमान तुम्हे

सियरामदुहाड ॥ १२ ॥ रोगावियो
गविदारणकोतवभालके श्रं
कसै श्रंकगटैतै ॥ पुत्रप्रपौत्रसा
यापरिवारसखासवसागरसेतु
बधैतै ॥ जोजनतै नचलैसगसै

अपराधकरैराजराजबढेतै॥ दा
रिददोयमितैतुलसीहनुमान
केपांचकवित्तपढेतै॥ १३॥ श्री
तुलसीदासकृतशंकटसोचनकवि
तसंपूर्ण॥ अथ ध्यानं ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥

उल्लेघिसिंधोःसलिलंसलीलं
यःश्लोकवद्भिः॥जनकात्मजा।
याश्चादायतेनैवददाहलंका॥
नमांतेश्रोजलिरांजनेयम्॥१॥
अतुलितवलधामंस्वर्णशैला

भदेहं॥दनुजवनकृशानुजानि
नामाग्रगण्यं॥सकलगुणनिधा॥
नंदानराणामर्धांशं॥रघुपतिवर
दूतंवातजातंनमामि॥२॥श्रंजना
तेदनेवीरजानकीशेकनाशनं॥

कपीशमन्त्रहन्ता वंदे लंकाभयं
करम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ
शनिदेवकी कथा लिख्यते ॥ एक
उज्जीननगरी ॥ जहानराजा वीर
विक्रमादित्यराजकरै ॥ बडोय

सात्मापरउपकारी॥आछीनी
तिकोचलनहारो॥जाकाराजमे
कोइंदुषपावैनही॥परायादुष
वास्तेआपणोद्रव्यपरचैआप
दुषभुगतै॥सकलकीसहाय

करै॥ एक समै राजा बैठौ शास्त्र।
की कथा सुनै छे॥ सार समै श्रां
शानि देवता की कथा नारी॥
तब राजा सारा पंडिता पृछ्या॥
अहो पंडितो नवगुह देवता हो

यछे॥जिनमैकुणसोदेवताव
डोछे॥तवएकपंडितबोले॥
महाराजश्रीसूरजदेवताबडो
छे॥कश्यपराजाकोपुत्रछेश्रीस
रजदेवताकाप्रकाशहुयासार

ह्रीं देवता न को पूजन होय छै ॥
दुसरो पंडित वाल्यो चंद्र देव व
डा छै ॥ चंद्रमा ऊ री सारी त पति
बुझै छै अनेक औ यधि अठार
ह भारवना सपती को पोयन

होयछे॥तीसरोपंडितबोल्हो
मंगलदेवताबडोछे॥पृथ्वीको
पुत्रछेलालवस्त्रपहरैछेलाल
दानसौंरुपिछे॥चौथोपंडित
बोल्होमहाराजबुद्धदेवताबडो

छै॥ या कृपूज्या बुद्धि बढै छै॥ पां
चवौं पांडित बोल्यो बृहस्पति दे
वता बडो छै॥ सर्व देवता न को
गुरु छै सर्व दुको दाता छै॥ छ।
ठो पांडित बोल्यो महाराज शुक्र

देवता बडो छै॥ देयो राजा बलि कूं
कौन पदी पढ़ चायो छै॥ सात वों
पंडित बोल्यो शान्ति देवता बडो छै
काला बख पहरै छै॥ काला दान
सुत्त प्रि होय छै पूजा करै जा कूं नै

हाल करै छै ॥ नही पूजा करै जा
कू महा दुष दे छै ॥ आठवों पंडे
तबो ल्यो महाराज राह देवता ब
डा छै ॥ देयो चंद्रमा सूर्य कौ छि ।
पावै छै और ग्रहण करै छै ॥ नवों

पंडित बोल्यो केतु देवता बडो
छै॥ राह का मस्तक को छै॥ या की
पूजा कियो रिद्धि बढै छै॥ ये सा
री बार्ता पंडितानै राजा वीर विक्र
मादित्य से कह्यो॥ तब राजा विक्र

मादित्यबोल्यो॥ और देवता तो
सब शुद्ध है॥ पर शनि देवता के
काला वस्त्र है॥ या को प्रबोध तो
बड़ा है यां को स्वरूप देख्या पाछे
मन में शक्ति दाय है॥ तब सा

गड्पंडितबोल्या॥महाराजड॥ ॥
सांवातसुखसोंनहीकाटिजे॥स
नीश्वरजीबडोदेवताछे॥जीकी
रासिपरचोथे॥आठवेंबारवेंआ
वेतौआवताहीमतिहीणकरै॥

देस छुड़ावै पर देस रावन क
रावै ॥ ता संया की पूजा करी भ
ली छै बड़ा बड़ा राजा सेवा क
रै छै ॥ सर्व ग्रह शनि की वीनती
करै छै ॥ या की कर निजर दुया

पाछे सर्वही न करै छै सर्व दुय
भुगता वै हाथ पावयं डित क
रावै॥ ता सें या की पूजा की या स
र्व दुय हरि होय॥ ये वा त पें डित
न नै राजा विक्रमादित्य सें बही

तवराजाविक्रमादित्यबोले
येतोवातहसारासनमैनही
आडे॥ येवारताकहताडे श्री
शनिदेवताआकाससारग
मेविवाणमैवैठजायछा॥ सो

आकासवाणीयां सृभायतवो
ल्या॥ राजा विक्रमादित्य स्हारी
निंदातै करी छे सो तो कुं जाणेनं छे
परजाण कर अरु वफल भुगता ऊं
गो॥ इतनी कह कर श्री शनि देव

ता आकाससारगमै जातो भ।
यो॥ तव राजा की वार वीरा सि
पै शानि देवता आये॥ जब चम
त्कार हो बालारयो॥ येक समै रा
जा सभा समेत दरवार मै बैठा त

वयेकब्राह्मणदुर्वलश्रायो॥ब्रा
ह्मणतीक्ष्णसहादुर्वल॥तवरा
जाविक्रमादित्यबोल्याहोब्राह्म
णदेवताथोकेजोदुयहोयसेसो
संकहो॥मैथोकोदुयदूरिकरु॥

तव ब्राह्मण बोल्यो ॥ महाराज मे
रे घर चाला तो मै दुय का कहूँ ॥ त
व राजा विक्रमादित्य राति मै ब्रा
ह्मण कै घर गयो और पृच्छी ॥
हो ब्राह्मण देवता तो कूँ का डे

कष्टछे सो मो संक है मै तेरो कष्ट
काटना दूंगो ॥ तब ब्राह्मण कहो
महाराज ये महाको कष्ट काटो
गा तो था मै कष्ट पड़ेगो ॥ पर श्री
परमेश्वर था को सहाय करै लो ॥

महाकावचनसत्यकारिजानि॥
लीजा॥ तबराजाआपकेसहल
आयोश्रीशनिदेवकोप्रकाश
होवालाग्यो॥ राजाक्रियाहीन
भयो॥ मंत्रीहीनभयोवचनही

नहोवालागो॥ राजाकाशरीरमें
रोगउत्पन्नहोवालोगोतबसारा
हीजाणीराजाबादलोहोगयो॥
तबराजाश्रीशनिदेवताकीपूजा
करी॥ सोशनिदेवतातुष्टमानहु

यानही॥ तव एक दिन राजा रति
कूनि कसभा रादे सछो डोपर
देस बहतो फिरो॥ को डेरि छा
नही करै महा परेशान डोलै एक
समे राजा मनी रास कांच पावती

नगरीमेंगयो॥ राजासनीरामरा
जकरैसाहश्रीपतिसेठकीहा
टऊपरजायवैठो॥ राजाछुधा
वंतछेभोजनकीचिंताकरैछे
श्रीपतिसाहकुंदयाआर्ड॥ आ

पकै घर ले गयो ॥ और साहणी
सूक हो या पर देसी के भोजन क
रावो ॥ तब साणि नै भोजन क
रायो और उत्तम राज हंस जाणे
तब विन साली सोवन की छी ॥

तहो एक चित्रा मको हंस मटोछे
साहण के सवा किरोड को हार
घूटी कैट को छोवा घूटी काठ
काँछी॥ शेर चित्रा मको हंस
दोछो सोशनि देवतानै चित्र

मकोहंससरजीवनकरदीनो
सोचित्रामकोहंसद्वारनिगले
छै॥ राजासूतोसूतोदयैछैऔर
चित्रामकोसोरद्वारनिगलगा
यो तवराजाजाणीकि॥शनी॥

श्वरदेवताकीनिंदामेंकरीछी
सोशनिदेवताकीकुरनजरछे
सोवरससाटासातभुगतएण॥ये
वातजासूकहूजाकासनमेंआवे
नही॥याकलंकचोरीकोसोबूल

ग्यो॥ तव साणि नैहार देव्यो॥ पा
यो नही॥ तव साणि नैश्रीपति से
ठ संकाही महाराज मेरो द्वार या
पर देसी नै लियो॥ तव श्रीपति
सेठ्यार॥ जाकु बुलाय कर पूछी

तैंसाणिकोहारलीनोसोदेघाल
तवरजाविक्रमादित्यबोलेयो॥में
तोहारलीनोनही॥जवश्रीपति
सेठनैकहीतोबूँमारैला॥ओरम
नीरामकनैलेजायगातवरजा॥

विक्रमबोल्यो॥ मैतो द्वार देख्यो
बीनही जो साची कहंतो कोर्ड
कामन मै आबै नही॥ तब राजा
कैयणी मार दी तो बी द्वार कबूल
नही॥ तब राजा विक्रम कूं मनीरा

मराजा कनैले गया॥ कहीं महा
राज मेरो सवा किरौड को दारया
पर देसी नैली नो॥ तव राजा मनीरा
मन्याव करवाला गो सो न्याव उप
जैत ही॥ तव राजा का छत्र ऊपर श

नी देवता आवेळ्या जवराजा
मनी राम कह्य जावो या काहा
थपाव काटि चौरंगो कर उजा
ड मैनाय आवो तवराजा काहु
कस सौ राजा विक्रम काहा थपा

बचौरंगाकरअजाडमेंनायआ॥
याराजाबहुतदुयपायो॥तबएक
तेलीनैदयाआईओरराजामनी
रामसेजाकरअरजकरीकही॥स
हाराजयेदयापालोनौथारीनग

री मैं एक बौरंगो महा दुय पावै छै
मो नै दु क म करो तो ले आऊं ॥ त
बरा जानै बी दया आई ॥ अरु क
ही जा भाई तू वा को जा बतो कर
बो कर ॥ तेली अ पणै घर ले आयो

अरुतेलणिसूंकहीचौरंगाकूला
योधूतववानैवेढोकराय्योज
वतेलीसूराजाविक्रमबोल्यो॥तैं
मेराबहुतजावताकिया॥मेकुण
तरैतोसूअएतरहंगोथेकहोतो

थोकाँघोणाँहाकवोकरुं॥श्रै
सैकडेंदिनबीतगयाबैहोधा
णाँहाकवोकरै॥वरससाततौ
बीतगयाछःसहीनावाकाँरहा
तवराजाकाजीवसैयुसालीभई

राजा मनीरासकी वेटी मन भोंव
तीछी॥ सोऊनैसणीछी राजा वि
क्रमादित्य बडो धर्मात्मा छै॥ व
डो न्याव करै छै छः राग जाणै छै
दीपक राग जोडै छै॥ तव मन भों

वर्तायापणधास्योपरणतौरा
जाविक्रमादित्यकूपरणयेवा
तौराजामनीरामनैसुर्णासनता
हीवाडुजीतियणैचढायदीनी
तवराजाविक्रमश्रपणादिनदे

या॥यादिकियाउजीएनगरीसूं
चाल्याजवसोंवरससाततौवीं।
तगया॥मह्नीनाछःवाकीरहात
वयेकदिनराजासरीरमेयुसालीं
हुईतबराजानैरागरंगाकीविचारी

राजा मनीराम को बेटी मन्त भाँव
ती काम हल कैनी चैतेली को घर
छे॥ जहाँ चौ रंगोर है छे तब एक
दिन चौ रंगो दीप कर गगा वै छे
आधी रात कै समे सो सारा सहर

मैं दीपक जुड़ गया दिवाली की ।
सीराति हो गई । जब सन भोंवती
बोली श्री दासी ये दीपक राग को
नगावै छै । ताको ठीक पाइत वदा
सीबोली बाड़े जी दीपक राग तोर

जा विक्रम जाणै छै ॥ और कोर्ड
जाणै नही सो राजा विक्रमादि
त्य श्रेष्ठ ही छै ॥ वा पैशानि देवता
की करन जहुहु छै तब वार्ड वा
ली मै तो वरमा लाया लूगी ॥ सो ॥

वाइजीकीजीभमोहीशनिदेवत
ष्टमानहुया॥रातिवीतीपरभात
हुईतवश्रायकीमातासूबाईक
हीमोकूवरश्राप्तिकरोवरमाला
घालेंगी॥येवार्तीराणीराजासूक

हीराजाजीकबूलकांनी॥ देसदे
सका राजाबुलायानगरदुहा
डेफेरी॥ साराहीनगरांकालोग
वागसवैराजायवैठा॥ तबतेली
बीबीरंगाकूलकरवैठ्या राजा

मनीरामकीवेटीमनभावतीवर
मालालीनीसबकेदेयताचौरंगा
केवरमालाघाली॥जबसबनेक
हीवाड़ेजीचूकीतबवरमालाफे
रिवाड़ेजीकूंदीनी॥तबफेरिबीब

रमालाचौरंगाकेहीघालीतव
सागहीउठगया॥वाड़ेजीपरणा
दीनीगांवसेकोसाएकउजाडमें
महलछा॥जहावाड़ेजीरायदी
नीतववाड़ेजीचाकरीमेंहाजर

है॥ आठों पहरे वा करी कर वो का
रै॥ तव शनीश्वरजी तुष्ट मानहु या
ज वराजा का जीव भें बहु तयु सा
लीहु दर्श॥ शनीश्वरजी दरसण दि
ये और कह्यो राजा ते मेरी निंदा क

रंछी तात तो कूंडत ना दुयदि
या ॥ तब राजा हाथ जोड़ और क
ही महाराज आप तो देवता छो
सर्वदात करवा जा छो ॥ मैं तो
आपको सेवक छु ॥ महाराज की

यातिरमें आया सो सो कू सय दुय
दिया ॥ तव शनी श्वर जीवो ल्या
ये राजा वा ब्राह्मण के कष्ट का
टो छे ॥ सो वा ब्राह्मण तो कूं आ ।
शीर्वाद दियो छे ॥ ताकी असी स

संतैरेऊपरसनजरिहुड्डे॥ अब
तौकुंहाथपावदिया॥ इतनीक
हताहीराजाकेहाथपांवहोगा।
या॥ औरकहीराजातूपरदुषभं
जनहारछैपरायोभलोचावैछै

जो तू सागै सो डूँडूँ ॥ तव राजा विक्र
म बो ल्यो महाराज मेरै ऊपर संतुष्ट
द्वया छोतौ या वर देवो ॥ जितनी
मेरै ऊपर कूरन जहुँ ॥ इतनी प्र
जा पै नै होय ॥ जब सनी श्री जी कहौ

हेराजा तेरा कह्या सें डत नो कष्ट
नही का डें कुं डूगो ॥ और हेराजा
मेरी कथा का डें नर नारी सण सी
ता पै मैं बद्ध तनुष्ट मान हो सी को
इ पी डित बाँचे ॥ ता कुं डत नो दुष

नही होसी ॥ इतनी कह कै शनीश्व
जीतो आकासमारग कूप धारा
तवराति वीती परभात दुर्दु ॥ तवरा
जाजी महल में बैठा वह तयुसी में
इतना में मनी रास की वेटी मन भा

वती नै आ कै सलाम करी ॥ जै देवै
तौ राजा कै हाथ पांव छे ॥ तव मन
भाँवती बहत युसी दुई ओर आ
पकी माता कूँदा सी हाथ बुलाई
फिर राणी जा कर राजा सँ मालुम ॥

करांतवसनीरामराजाअपणा
जीवमेवदुतयुसीदुवो॥ओरवदु
तदानपुन्यकियोसबहीकुंवदु
तयुसीदुई॥ओरराजाअसवारी
कराजाडकेमहलआयो॥तवरा

जाविक्रमादित्यकुंलेकरसहस्र
कामहलनमैश्रायोतवसबही
कुंबहुतयुसोद्भुद॥ तवराजाजा
णीयेमनुष्यनहीयेतौश्रोतार
पुरुषछे॥ सर्वदायजादिया॥ हा

थी घोड़ा ऊँट पालकी ही रामोती
लालन वारात बहुत सावखदी
ना॥ तब राजा विक्रमादित्य तेली
कूँ बहुत द्रव्य दीनो॥ और पिता की
सीना डेतेली कूँ राख्यो॥ फिर विक्र

सादित्यकी श्रुमनीरामकीसि
जसानीश्रीपतिसेठनैकरा॥सब
कूसाथलेकरजीमवागया॥ज
ववाहीचित्रसालीमेंजीमवावै
ह्या॥ऊठेईचित्रामकोहंसछोतव

सबकै देयता ही चित्रा मको हंस
हार उगलवाला गयो ॥ तब राजा वि
क्रम बो ल्यो देयो पंचोदह मारा दि
नयो टाछा ॥ जब तो चित्रा मको हंस
सहार निगल गयो ॥ आज ह मारा

भलादिन आयात वयाहं सर्वा
हारागलैछे॥ मोकुं साडासात
वरसकाशनी अरुनी आयाछा
सोमोमैंडतनावेयलाभुगताया
औरलाछनलगवाया॥ तवम

नीरामराजाविक्रमकैपावन
पड्यो॥ कहीं मेरी तक सीरमा
फकरो॥ तबराजाविक्रमसस
राकांघणीमनुहारकरीतबरा
जामनीरामकहीं॥ धन्यमेरो॥

भागश्रेयसाराजासंसतमदद्गुयो
जवयेवातश्रीपतिसेठनैसुणी
तवराजाविक्रमकैपगापडो॥
श्रीरकहीमहाराजमेरीचूकमा
फकरो॥तवराजाविक्रमनैवद्गु

तदिलासादिया॥ तव श्रीपति
सेठकैणककंन्यासूरतपाकछी
सोराजाविक्रमादित्यकूपरणा
दीनी॥ बहुतदायजोदियो॥ हा
थीघोडापालकीहीरामोतीला

लश्रुकजडाऊगहणादीना॥स
वाकिरोडकोद्वारादियो॥बस्त्र
अनेकदियेतवराजाविक्रनैम
नीरामश्रीरुपतिसेठसंकही
मोकूअवसायदीजे॥तौउजीण

नगरी कूं जावां॥ तब सब नैदाथा
जो डकर कही महाराज को ईदि
न तो डूटै शौर विराजो॥ तब राजा
विक्रमादित्य कही राजा होकर
बिदा करो तब राजा मनी रास शो

रथीपतिसेठनैराजीहोकेवि
दाकिया॥ऊठासूकेचकिया
उजाँणनगरीनैपधार्या॥सब
हीनैसुषपायो॥वाब्राह्मणकुं
सबनैबहुतमालादियासागदे

वतानकी पूजा करी॥ नौ गुह देव
तानकी पूजा करी॥ नगर कालो
गवाग बुलाया और कहीं मो कू
साडा सात वर सकोशनी श्वर॥
जी आये छो॥ सो सब ही सहाय

करी॥ अवयव कह कथा कोर्ड सुनै
कहै पंडित न संवचावै॥ जी प्र
नि देवता जी प्र सन्न हो सां॥ ओ
र दर साण दे सां ज व स व नै ड क
हो॥ हेराजा धन्य है तुम्हारी बु

द्विकों जो श्रेसी कह्यो ॥ अथ कोई
या कथा सुणै जो शनि देवता कू
प्यारो छै ॥ कोइ नर नारी राजा प्र
जा वा वै सुणै ॥ सो एका दर्शो हू
त कोइ नरो फल पावै ॥ ये कथा

कोई बाँचे जहाँ जहाँ सयर है॥
यह सत्य कर जाण ली ज्यो॥ इ
ति श्री शनी शरदे वकी कथा सं
पूर्णम्॥ शुभम्॥ ॐ ॥ भवतु

श्रीगणेशायनमः॥ अष्टशतली
लालित्यते॥ मूरयतूतनधारि
कैकहाकमायो॥ रामभजन
विनजन्मगमायो॥ पशुज्योउ
दरभरसोयो॥ पायो लालश्रव

रथायोयो॥१॥रामभजनगति
जाणांनाही॥भौंदृभूल्योधं।
धामाही॥मेरीमेरीकरतौफि।
ह्यो॥हारसमरनकबहनाक
ह्यो॥नारीसेतीनेहलगायो

कवहुनहिरदेसामहिलायो॥
सतमायासोयरोपियारो॥कव
हुनसमरुयोसरजनहारो॥जो
वनमदमातोअभिसानी॥घर
घरभटकतसंकनमानी॥स्वा

॥ रथमाहो बहुदिग्धाया ॥ गो
विंदगुणकबहुनादिगाया ॥ प
रं मनयायोरुविमानी ॥ कव
हहिरदैदयानश्रानी ॥ असेही
करतैव्याहारा ॥ आपनश्रायुत

एणअहंकारा॥वांध्योकालकियो ॥
चौरंगा॥सुतवितनारीकोउनसं
गा॥जोसुकरमकुकरमकीवा
री॥सोअवचालैलारतुम्हारी॥ज
मआगैलैठाडाकीया॥धर्मरायबु

ऊणकूलीया॥ कदद्यौजेतेकिये
कुकासा॥ कबड्डनसमुज्योपूर
एरासा॥ जिनपानीसौपैदाका
या॥ नरखरूपहारितोकूंदीया॥
तापैभांतूसूरयश्रंधा॥ जवतूआ

योजमकेधंधा॥तैंहरिकथासुनी
नहिकाना॥तौतूजमसौनाही॥
छाना॥साधुसंगमैकबहुनरहो
मुखतैरामनामनहिकह्यो॥सो
हरिविनबहुतैंदुषपायो॥धर्म

राजयूकहि समुजायो ॥ हरिकी ॥
भक्ति करे नर नारी ॥ धर्म राय यों
कहै विचारी ॥ सो कूं दोष न दीजो ॥
कोई ॥ जैसा करै भुगत है सोई ॥ पु
न्य पाप कूं न्या राखाने ॥ जो तू कर्म

करैसबजानूँ॥तेरेकर्मनोहिभुगता
ऊ॥आदिपुरुषकीआज्ञापाऊँ॥सा
हवकीआज्ञाहेमोकूँ॥महाकसो
टीदेहूँतोकूँ॥घरीघरीकालेया
लेहूँ॥कर्मदिकतेराभरदेहूँ॥इ

कहरिविनकोडनरयवारो॥ चित
दैससमरोसरज^नहारो॥ संकटमेंह
रिलेतउवारी॥ निसदिनसुमरो॥
नामसुगारी॥ रामानंदयोँकाहिस
मुजाई॥ हारिसुमर्याजमलोकन

